शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

# डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी : प्रखर राष्ट्रवादी और आधुनिक भारत के निर्माता

प्राप्तिः 12.03.2023
स्वीकृतः 16.03.2023

13

**डॉ० राजेश गर्ग**
प्रोफेसर
डी०ए०वी० (पी०जी०) कॉलेज, बुलंदशहर

**कुलदीप शर्मा**
शोधार्थी
डी०ए०वी० (पी०जी०) कॉलेज, बुलंदशहर
ईमेलः *sonu.sharma134@gmail.com*

***सारांश***

*ऋषि और मनीषियों की इस धरा पर अनेक ऐसे महापुरूषों ने जन्म लिया है, जो अपने कर्तव्य पथ पर चलकर सदा के लिए अमर हो गए। इन्हीं महापुरूषों की श्रृंखला में डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम अग्रणीय है। 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता में आशुतोष मुखर्जी के घर जन्में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने आजाद भारत में भारत की एकता और अखंडता के लिए अपना बलिदान दे दिया था। ब्रिटिशकाल में अपनी मेधा के बल पर ही वे विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने थे। इस पद पर पहुंचने वाले वे एशिया के सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे। देश के पहले उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री के तौर पर उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को दामादोर घाटी निगम, सिंदरी फर्टिलाइजर्स, चितरंजन रेलवे कारखाना और बंगलौर में हवाई जहाज कारखाना आदि प्रदान किए। अखंड भारत के सपने को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए ही उन्होंने मंत्री पद त्याग दिया था। जिस प्रकार लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने खंड–खंड हो रहे देश को अखंड बनाया, उसी प्रकार डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अखंड भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए अपना पूरा जीवन बलिदान कर दिया।*

***मुख्य बिन्दु***

*डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी, अखंड भारत, जनसंघ, भारतीय जनता पार्टी, 370.*

इस नश्वर विश्व में ऐसे कम ही लोग हुए हैं, जिन्होंने जीवन के केवल 52 साल के अंतिम 14 साल राजनीति में बिताए हों और इसी अल्पावधि में वे सार्वजनिक जीवन की महत्तम ऊंचाई को छूकर इतिहास में अमर हो गए हों। ऐसे ही थे डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी। श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जन्म छः जुलाई 1901 (संवत 1958 शाके 1823 श्रावण मासे कृष्णपक्षे 5 तिथि शनिवासरे 43/28 शतभिषा नक्षत्रे 37/10 ) को श्री आशुतोष मुखर्जी तथा योगमाया देवी के पुत्र के रुप में हुआ। उनके पितामह श्री गंगा प्रसाद मुखर्जी की ख्याति एक योग्य चिकित्सक के रूप में बंगाल में दूर–दूर तक फैली थी।[1] उन्होंने अपनी अंतिम श्वास संदिग्ध परिस्थितियों में 23 जून 1953 को श्रीनगर में ली, जहां

उन्हें नजरबंद रखा गया था।[2] डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी और उनके सबसे प्रिय सहयोगी पंडित दीनदयाल उपाध्याय, दोनों का जीवनकाल बहुत छोटा था। उन दोनों के निधन में भी दुःखद समानता थी। इन दोनों महापुरूषों की मृत्यु रहस्यमयी परिस्थितियों में हुई थी और मात्र 52 वर्ष की अल्प आयु में वे दोनों इस संसार को छोड़ गए थे। 'बांग्लार बाघ' अर्थात बंगाल टाइगर के नाम से सुविख्यात महान शिक्षाविद सर आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता उच्च न्यायालय (हाईकोर्ट) के प्रमुख न्यायमूर्तियों में से एक थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय के तो जन्मदाता ही वह माने जाते हैं। विशाल सम्पति का दान कर उन्होंने उस मातृमन्दिर को पुनर्जीवन दान दिया।[3] आशुतोष मुखर्जी छात्र जीवन से ही तीव्र बुद्वि के स्वामी थे। अपनी अद्भुत मेधा के बल पर उन्होंने छात्र जीवन में ही लंदन मैथेमैटिकल सोसाइटी की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। उन्होंने ज्यामिती के क्षेत्र में एक खोज की जो इंग्लैंड में 'मुखर्जी थ्योरम' के नाम से प्रचलित हुई।[4] श्यामा प्रसाद मुखर्जी की माता योगमाया देवी पतिव्रता और धार्मिक महिला थीं। माता और पिता के गुणों का प्रभाव श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर पड़ना स्वाभाविक ही था। सर आशुतोष मुखर्जी अपने लाड़ले दूसरे बेटे श्यामा प्रसाद मुखर्जी को हमेशा अपने साथ रखते थे। वे सावर्जनिक कार्यक्रमों में अपने साथ बेटे को लेकर जाते थे। इससे मेधा के धनी श्यामा प्रसाद मुखर्जी को अनेक लोगों के विचार जानने और उन्हें भली–भांति समझने का अवसर मिला।[5]

सर आशुतोष मुखर्जी के दूसरे पुत्र डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भी अपने जीवन का प्रारंभ एक शिक्षाविद तथा एक वकील के रूप में किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी आशुतोष मुखर्जी ने अपने बड़े बेटे रामा प्रसाद का पालन पोषण ऐसे किया कि वे कानून के क्षेत्र में अपना नाम करे और दूसरा बेटा डा० श्यामा प्रसाद शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े। कलकत्ता विश्वविद्यालय में शानदार शैक्षणिक रिकॉर्ड तथा स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाकर श्यामा प्रसाद ने कलकत्ता उच्च न्यायालय में 'इंडियन बार' के सदस्य बनने के लिए कानून का अध्ययन किया और इसके बाद बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैण्ड रवाना हो गए, जिससे कि वे 'इंग्लिश बार' में सदस्य बन सकें।[6] लेकिन उनके इंग्लैण्ड जाने का मूल उद्देश्य ब्रिटेन में विश्वविद्यालयों की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना था। उन्होंने यही किया और कलकत्ता विश्वविद्यालय के सिंडिकेट के केवल 23 साल की उम्र में वह इसके सबसे युवा सदस्य थे। उस समय भारत में 'दैध शासन प्रणाली' के माध्यम से शासन चलाया जाता था। इसमें शिक्षा 'हस्तांरित विषयों' में से एक थी, जो मांटेग्यू–चेम्सफोर्ड रिपोर्ट, 1919 द्वारा प्रारंभ की गई थी।[7] यह ऊपरी दृष्टि से स्थानातंरित विषयों में एक थी, किन्तु इसमें भारतीयों के लिए अधिक कुछ नहीं था। इसी को देखते हुए श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विश्वविद्यालय चुनाव क्षेत्र से 1929 में विधान परिषद में प्रवेश किया। हालांकि इसके तुरंत बाद ही कांग्रेस ने परिषद के बहिष्कार का फैसला किया। श्यामा प्रसाद इस निर्णय से सहमत नहीं हुए और विधान परिषद में एक स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में वापस आने के लिए अपनी सीट से त्यागपत्र दे दिया। अपने जीवन के उस दौर में वे राजनीति के बजाए शिक्षा को लेकर अधिक चिंतित थे। श्यामा प्रसाद मुखर्जी मूलतः शिक्षा से जुड़े हुए विद्वान व्यक्ति थे। शिक्षाविद्व एवं विधिवेत्ता होने की योग्यता उन्हें विरासत में प्राप्त हुई थी। उस युवावस्था में श्यामा प्रसाद ने विश्वविद्यालय से सम्बन्धित विषयों में अपने आपको इतने सुन्दर प्रकार से प्रस्तुत किया कि उस समय के महान वैज्ञानिक प्रफुल्ल चंद्र रॉय ने उन्हें 'अपने पिता का पुत्र' कहते हुए बधाई दी। सिर्फ 33 साल की अविश्वसनीयय उम्र वे कलकत्ता

विश्वविद्यालय के उपकुलपति बन गए। उन्होंने विश्वविद्यालय संचालन में नए प्राण डाल दिए।[8] 1934–1938 तक उन्होंने उपकुलपति के रूप में दो–दो वर्ष के दो कार्यकाल पूरे किए। वे एशिया के सबसे कम उम्र के प्रतिभावान उपकुलपति बने।[9] इस पद पर रहते हुए भारतीय दृष्टिकोण से भारतीय इतिहास में गंभीर शोध करने के इच्छुक राष्ट्रवादी विद्वानों को उन्होंने भरपूर सहयोग एवं समर्थन दिया। विश्वविद्यालय में पुरातत्व अध्ययन के लिए खुदाई को प्रोत्साहन के साथ–साथ भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व से संबंधित पहले संग्रहालय की नींव रखी तथा भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा संस्कृत के अध्ययन के लिए अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों से वहां के छात्रों को भारत भेजने का अनुरोध किया।[10] उन्होंने भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहिति किया और 1937 में गुरूदेव रबिन्द्रनाथ टैगोर को दीक्षांत समारोह में छात्रों को बांग्ला में संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया।[11] यह प्रथम अवसर था जब भारत के किसी भी विश्वविद्यालय में, बंगाल या किसी भी भारतीय राज्य में, किसी दीक्षांत समारोह को बांग्ला या किसी अन्य भारतीय भाषा में संबोधित किया गया। इसके साथ ही बंगाल और अन्य भारतीय भाषाओं पर अंग्रेजी के प्रभुत्व के युग की शुरूआत का दौर शुरू हो गया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी के प्रयासों से कलकत्ता विश्वविद्यालय उन दिनों एक बहुत बड़ी संस्था बन चुका था, जिसमें सभी प्राचीन विषयों के साथ ही नवीन विषयों का भी अध्ययन कराया जाता था। शिक्षाशास्त्री के रूप में ख्याति अर्जित करने का एक बड़ा कारण यह था कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सभी विषयों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय में घटित होने वाली दैनिक गतिविधियों का भी पर्याप्त ज्ञान होता था। वह कर्मचारियों और छात्रों की समस्या समाधान के लिए सदैव तत्पर रहते थे। इसी कारण सीनेट के अन्य सदस्य उनके निर्णयों को श्रद्वा से सुनते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके आदेशों के अन्तर्गत विश्वविद्यालय पर्याप्त उन्नत हुआ।[12]

डॉ० मुखर्जी का वैवाहिक जीवन अधिक नहीं चल सका। उनकी पत्नी श्रीमति सुधा देवी का 1932 में परलोक गमन हो गया था। 4 जनवरी 1946 को अपनी डायरी में प्रिय पत्नी का उन्होंने संस्मरण लिखा था। मैं उसे बहुत गहराई से प्यार करत था और उस पर अटूट विश्वास था... मैंने पुनर्विवाह की सोची ही नहीं। सिर्फ इसलिए नहीं कि मैं सुधा से गहरा प्यार करता था, बल्कि इसलिए कि मैं अपने बच्चों के कल्याण की सोचता था। मै अपने बच्चों को किसी अजनबी को उनकी मां की जगह सौंपकर उनकी भावनाएं आहत नहीं करना चाहता था।[13] उनके इस विचारों से स्पष्ट है कि वे अपने परिवार के प्रति भी पूर्ण रूप से समर्पित थे। श्यामा प्रसाद मुखर्जी की माता श्रीमति योगमाया भी लाख प्रयत्न करके उन्हें पुनर्विवाह के लिए नहीं मना सकी।

1943 में बंगाल एक अकाल का शिकार हुआ।[14] 1943 के आरंभिक महीनों में ही बंगाल में अकाल ने अपने पांव पसार लिए थे। ऐसे में महंगाई का बढ़ना भी स्वाभाविक था। सितंबर और अक्टूबर का महीना आते–आते बंगाल का अकाल और महंगाई दोनों ही चरम पर पहुंच चुके थे। फरवरी 1943 में बंगाल में 36 किलो चावल 4 रूपये में मिलता था, जो सितंबर 1943 में 100 रूपये तक पहुंच चुका था। डॉ० मुखर्जी ने इस अकाल का पूरी ताकत से सामना किया। उन्होंने अपनी सांख दांव पर लगा देश भर से व्यापारिक घरानों, सामाजिक संस्थाओं और दानदाताओं को संगठित किया। अकाल की समस्या से निबटने के लिए एक विशाल राहत कार्यक्रम का भी आयोजन किया

गया। उनके प्रयासों से उस समय तकरीबन 50 लाख रूपये एकत्रित करके बंगाल प्रांत के अकाल प्रभावित हिस्सों में राहत केंद्र चलाए गए।[15] इससे लाखों लोगों को मौत के विकराल जाल में फंसने से बचा लिया गया।

इससे पूर्व ही अपनी ख्याति और प्रतिभा के बल पर श्यामा प्रसाद मुखर्जी 1929 में विधानसभा के सदस्य के रूप में औपचारिक रूप से राजनीति में आ गए थे। वे कट्टर हिन्दुत्व विचारधारा के समर्थक थे। उन्होंने अनुभव किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और वीर सावरकर हिन्दू समर्थक हैं। ऐसे में उनका रूझान आरएसएस और वीर सावरकर की तरफ होना तय था। 1940 में हिन्दू महासभा के अध्यक्ष वीर सावरकर का स्वाथ्य ठीक नहीं चल रहा था, ऐसे में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत भ्रमण करके लोगों को हिन्दू महासभा और उसके कार्यों के प्रति जागरू करने का कार्य किया।[16]

वे संवेदनशील समाजकर्मी, राष्ट्रवादी राजनेता और प्रखर सांसद बने। उन्होंने युगधर्म के आह्मन को स्वीकार किया। राष्ट्रीय एकात्मता और अखंडता के प्रति उनकी अगाध श्रद्वा ने उन्हें राजनीति के समर में झोंक दिया। अंग्रेजो की 'फूट डालो और राज करो' की नीति ने मुस्लिम लीग को स्थापित किया था। डॉ० मुखर्जी ने हिन्दू महासभा का नेतृत्व ग्रहण कर इस नीति को ललकारा। महात्मा गांधी ने उनके हिन्दू महासभा में शामिल होने का स्वागत किया।[17] उनका मत था कि हिन्दू महासभा में मालवीय जी के बाद किसी योग्य व्यक्ति के मार्गदर्शन की जरूरत थी।[18] कांग्रेस यदि उनकी सलाह को मानती तो हिन्दू महासभा कांग्रेस की ताकत बनती तथा मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की मनोकामना पूर्ण नहीं होती। डॉ० मुखर्जी कहीं से भी मुस्लिम विरोधी नहीं थे परंतु वे मुस्लिम लीग की नीतियों के घोर विरोधी थे। 1937 के चुनावों में डॉ० मुखर्जी के प्रयत्नों ने बंगाल में मुस्लिम लीग को धूल चटाई थी। 1941 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सहयोग से बंगाल में एके फजलुल हक की अध्यक्षता वाली कृषक प्रजा पार्टी की सरकार बनी। इस नए मंत्रिमंडल में फजलुल हक मुख्यमंत्री और डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी वित्त मंत्री बने। उन्होंने एक मंत्री होने का दायित्व निभाते हुए बंगाल में हिन्दुओं का उत्पीड़न नहीं होने देने की कड़ी व्यवस्था कराई।[19]

डॉ० श्यामा मुखर्जी अखंड भारत के समर्थक थे। अपने भाषणों के माध्यम से कई बार वह संयुक्त भारत की वकालत कर चुके थे। 1943 में हरिद्वार स्थित गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उन्होंने कहा था कि– हम गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेते चले, वर्तमान की मुश्किलों एवं परीक्षणों का सामना करने के लिए धैर्य एवं शक्ति बनाए रखें और निर्भिक रूप से भविष्य के स्वतंत्र एवं संयुक्त भारत के पुनर्निमाण में अपना विनम्र योगदान प्रदान करें।[20] ऐसा नहीं है कि हिन्दू महासभा से जुड़ने के बाद ही डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के मन और मस्तिष्क में अखंड भारत का सपना जागृत हुआ हो। कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद पर रहते हुए भी 24 जनवरी 1936 को उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा था कि– हो सकता है, हमें यह स्मरण न हो कि हमारा आदर्श सद्भाव है, कलह नहीं; स्वतंत्रता है, गुलामी नहीं; युद्व–दलबंदी, जाति, संप्रदाय एवं एक–दूसरे के प्रति अविश्वास नहीं; बल्कि एक संयुक्त बंगाल–वर्तमान में संयुक्त भारत है, जो आत्मबोध की दिशा में दृढता के साथ अग्रसर है।[21]

दुर्भाग्य से 1946 के चुनावों में मुस्लिम लीग सिंध और बंगाल में सरकार बनाने में सफल हो गई। मुस्लिम लीग कलकत्ता और लाहौर को पाकिस्तान में मिलाने के लिए कटिबद्व थी। कांग्रेस ने भारत विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार करते हुए पूरे बंगाल एवं पूरे पंजाब को पाकिस्तान को देना स्वीकार कर लिया था। मार्च 1947 में बंगाल के हिन्दू प्रतिनिधियों के सम्मेलन में सर्वसम्मत प्रस्ताव किया गया कि बंगाल के हिन्दू बहुल क्षेत्रों को पाकिस्तान कदापि नहीं जाने दिया जाएगा। बंगाल का विभाजन अनिवार्य है। बंगाल के हिन्दू बाहुल्य क्षेत्रों को मिलाकर एक अलग प्रांत की रचना की जानी चाहिए।[22]

डॉ० मुखर्जी ने इसका प्रखर विरोध किया, परिणामतः बंगाल एवं पंजाब का विभाजन हुआ। डॉ० मुखर्जी भले ही भारत विभाजन की त्रासदी को रोक पाने में सफल नहीं हुए, किन्तु वे बंगाल और पंजाब को विभाजित कर दोनों राज्यों के क्षेत्रों को भारत में बनाए रखने में अवश्य सफल हो गए थे।[23] विभाजन के संदर्भ में पंडित नेहरू के एक आरोप के जवाब में मुखर्जी ने कहा आपने भारत का विभाजन करवाया तथा मैंने पाकिस्तान का विभाजन करवाया है।[24]

डॉ० मुखर्जी के प्रयत्नों से कलकत्ता तो बच गया, लेकिन लाहौर को बचाना संभव नहीं हुआ। डॉ० मुखर्जी ने कांग्रेस में जाने की बजाय हिन्दू महासभा में ही काम करना तय किया था, लेकिन कलकत्ता में उन्होंने हिन्दू महासभा छोड़ दी, क्योंकि महासभा ने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया कि महासभा सभी भारतीयों के लिए अपनी सदस्यता के द्वार खोल दे। महात्मा गांधी के आग्रह पर कांग्रेसी न होते हुए भी डॉ० मुखर्जी को पंडित जवाहर लाल नेहरू ने प्रथम मंत्रिमण्डल में शामिल किया था। वे भारत के प्रथम उद्योग तथा आपूर्ति मंत्री बने थे।[25]

भारत की औद्योगिक नीति की नींव सिद्वांततः उनके ही द्वारा डाली गई थी, लेकिन पंडित नेहरू सरकार की कश्मीर के प्रति उपेक्षापूर्ण नीतियों के साथ वे सामंजस्य नहीं बैठा सके। अतः 8 अप्रैल 1950 को ढ़ाई साल बाद, उन्होंने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया।[26] आजाद भारत के ये पहले ढाई साल ही आगे चलकर देश के लिए स्वर्णिम साबित हुए। अपने इस छोटे से कार्यकाल में डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय औद्योगिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए। बैंगलोर का हवाई जहाज कारखाना, चितरंजन स्थित रेलवे इंजन का कारखाना और बिहार का सिंद्री खाद्य निर्माण कारखाना आज डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की बदौलत ही गर्व से सिर ऊंचा उठाकर भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दे रहे हैं।[27]

वास्तव में सत्ता उनके व्यक्तित्व को बांधने में सफल नहीं हो सकी, उन्होंने अपनी शर्तों पर राजनीति की। आजादी के आंदोलन में भारत की अखण्डता की रक्षा का मिशन लेकर ही डॉ० मुखर्जी राजनीति में आए थे। ऐसे में उन्होंने मंत्रिमंडल से बाहर आकर राष्ट्रवादी राजनैतिक दल के अपने संकल्प को पूरा किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघ चालक श्री माधवराज सदाशिवराव गोलवलकर (गुरुजी) की सहायता से 21 अक्टूबर 1951 को भारतीय जनसंघ की स्थापना की।[28]

देश में पहला आम चुनाव 25 अक्टूबर, 1951 से 21 फरवरी, 1952 तक हुआ। इन आम चुनावों में जनसंघ के 3 सांसद चुने गए, जिनमें एक डॉ० मुखर्जी भी थे। तत्पश्चात उन्होंने संसद के अंदर 32 लोकसभा और 10 राज्यसभा सांसदों के सहयोग से नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी का गठन

किया। जनसंघ की स्थापना के साथ ही कश्मीर को भारत का अविभाज्य हिस्सा बनाने का आंदोलन उन्होंने प्रारंभ किया। कश्मीर को विशेष संप्रुभता देकर धारा 370 के अधीन अलग संविधान, अलग कार्यपालिका तथा अलग झंडा देने के प्रस्ताव को, प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू अपनी स्वीकृति दे चुके थे। संसद में बहस, आपसी वार्तालाप एवं पत्राचार के माध्यम से, उन्होंने सरकार को समझाने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन अंततः उन्हें इसके विरोध में सत्याग्रह करना पड़ा। बिना परमिट लिए उन्होंने 'एक देश में दो विधान, एक देश में दो प्रधान, एक देश में दो निशान– नहीं चलेंगे–नहीं चलेंगे के' नारे लगाते हुए जम्मू–कश्मीर में प्रवेश किया। शेख अब्दुल्ला की सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया। वहां रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई।[29] उनकी मृत्यु के कारणों का खुलासा आज तक नहीं हो सका है।

भारत की एकता और अखंडता के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले मां भारती के सच्चे सपूत का पार्थिव शरीर विमान द्वारा श्रीनगर से कलकत्ता ले जाया गया, जहां दो लाख से भी अधिक लोग अपने नायक को श्रद्वांजलि प्रदान करने के लिए जुटे थे। उस समय चारों ओर मानवता का सागर हिलोरे मार रहा था। अंतिम यात्रा के दौरान पुश्पों द्वारा श्रद्वांजलि देने के लिए छतों, खिड़कियों और बालकनियों जैसे स्थानों पर ऐसे लोगों का जनसमूह खड़ा था, जो शायद कभी उनसे व्यक्तिगत रूप से मिला हो। इससे पहले ऐसा दृश्य 1925 में 'देशबन्धु' डॉ० चितरंजन दास की दार्जलिंग से उनकी अंतिम यात्रा के समय देखा गया था।[30]

भारत की अखण्डता के लिए आजाद भारत, में यह पहला बलिदान था। धारा 370 के तहत कश्मीर को भारत के संपूर्ण संविधान के दायरे से अलग रखने की साजिश लंबे समय तक चलती रही, लेकिन उन्हीं के द्वारा स्थापित राजनैतिक दल जन संघ (वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी) ने इसे नाकाम कर दिया है। उसी राजनैतिक दल के कर्मठ कार्यकर्ता और डॉ० मुखर्जी के पद्चिन्हों पर चले हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धारा 370 हटाकर डॉ० मुखर्जी के सपने को साकार किया। आज कश्मीर में तिरंगा शान से लहरा रहा है। 'एक देश में दो विधान, एक देश में दो प्रधान, एक देश में दो निशान' का सपना अब चकनाचूर हो चुका है। इसका श्रेय सबसे अधिक डॉ० मुखर्जी को ही जाता है।

भारतीय जनसंघ से लेकर भाजपा के प्रत्येक घोषणा पत्र में अपने बलिदानी नेता डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के इस घोष वाक्य को, कि 'हम संविधान की अस्थायी धारा 370 को समाप्त करेंगे', सदैव लिखा जाता रहा। समय आया तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जिन्होंने स्वयं डॉ० मुरली मनोहर जोशी के साथ भारत की यात्रा करते हुए श्रीनगर के लाल चौक पर तिरंगा फहराया था और गृह मंत्री अमित शाह ने 5 अगस्त, 2019 को धारा 370 को राष्ट्र हित में समाप्त करने के निर्णय को दोनों सदनों से पारित कर डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि दी। वे महापुरुष बहुत भाग्यशाली होते हैं, जिनकी आने वाली पीढ़ी अपने पूर्वजों की कही गई बातों को साकार करती है। डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी भाग्यशाली हैं कि उनके विचारों के संवाहक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं गृह मंत्री अमित शाह सहित पूरे मंत्रिमंडल ने धारा 370 को समाप्त कर दुनिया को बता दिया :–

जहां हुए बलिदान मुखर्जी, वो कश्मीर हमारा है,
जो कश्मीर हमारा है, वह सारा का सारा है।

वास्तव में उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे महाबोधि संगठन के भी अध्यक्ष बने, वे संविधान सभा में चुने गए, वे सांसद भी रहे और वे मंत्री भी रहे। अनेक क्षेत्रों में, उनकी अद्‌भुत संवेदनशीलता, राष्ट्रभक्ति एवं प्रतिभा का प्रकटीकरण हुआ। राष्ट्र को उनकी सबसे महत्वपूर्ण देन थी– भारतीय जनसंघ नामक राष्ट्रवादी राजनैतिक दल, जो आज विश्व की सबसे बड़ी कार्यकर्ता पार्टी भारतीय जनता पार्टी के रूप में स्थापित हो चुकी है। नीति के आधार पर वे स्वयं सत्ता छोड़ आए थे। वे प्रखर नेता थे। संसद में भारतीय जनसंघ छोटा दल था, लेकिन उनके नेतृत्व में संसद में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल गठित हुआ, जिसमें गणतंत्र परिषद, अकाली दल, हिन्दू महासभा एवं अनेक निर्दलीय सांसद शामिल थे। जब संसद में पंडित नेहरू ने भारतीय जनसंघ को कुचलने की बात कही तब डॉ० मुखर्जी ने कहा, 'हम देश की राजनीति से इस कुचलने वाली मनोवृति को कुचल देंगे।' आज उनके मुख से निकले शब्द सत्य में तब्दील हो चुके हैं। जिस प्रकार हैदराबाद को भारत में विलय करने का श्रेय सरदार पटेल को जाता है, ठीक उसी प्रकार बंगाल, पंजाब और कश्मीर के अधिकांश भागों को भारत का अभिन्न अंग बनाये रखने की सफलता प्राप्ति में डॉ० मुखर्जी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। उन्हें किसी दल की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता, क्योंकि उन्होंने जो कुछ किया, देश के लिए किया और इसी भारतभूमि के लिए अपना बलिदान तक दे दिया। वे सच्चे अर्थों में राष्ट्रधर्म का पालन करने वाले साहसी, निडर एवं जुझारु कर्मयोद्धा थे। जीवन में जब भी निर्माण की आवाज उठेगी, पौरुष की मशाल जगेगी, सत्य की आंख खुलेगी एवं अखंड राष्ट्रीयता की बात होगी, तो डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अवदान को सदा याद किया जायेगा।

## संदर्भ

1. मुखर्जी, श्यामा प्रसाद., मुखर्जी, डॉ० श्यामा प्रसाद. (1990). एमिनेंट पार्लियामेंटेरियन्स मोनोग्राफ सीरीज. लोकसभा सक्रेक्यिटः नई दिल्ली. पृष्ठ **1.**
2. रॉय, तथागत., (2013). अप्रतिम नायक. प्रभात प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **356.**
3. शास्त्री, प्रकाशवीर. (2011). कश्मीर की वेदी पर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान. नई दिल्ली. पृष्ठ **13.**
4. शर्मा, हरीशदत्त. (2017). राष्ट्रीय जीवनी माला डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी. फयूजन बुक्सः नई दिल्ली. पृष्ठ **12.**
5. वही. पृष्ठ **13.**
6. गोयल, शिवकुमार. (2017). डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी. भारतीय साहित्य संग्रह. नई दिल्ली. पृष्ठ **21.**
7. रॉय. तथागत. वही. पृष्ठ **54.**
8. शर्मा, डॉ० गोविंद. (2009). देशज स्वाभिमान के प्रतीक : डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी. मध्य प्रदेश संदेशः भोपाल. जुलाई. पृष्ठ **74.**
9. शास्त्री, प्रकाशवीर. वही. पृष्ठ **17.**
10. गोयल, शिवकुमार. वही. पृष्ठ **25.**

11. दास, एस०सी०. (2000). बायोग्राफी ऑफ भारत केसरी डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विद मॉडल एम्पलीकेशन्स. अभिनव पब्लिकेशन्सः नई दिल्ली. पृष्ठ **186.**
12. शास्त्री, प्रकाशवीर. वही. पृष्ठ **19.**
13. रॉय, तथागत. वही. पृष्ठ **47.**
14. दास, वही. पृष्ठ **226.**
15. खंडेवाल, देवेश. (2018). एकात्म भारत का संकल्प. प्रभात प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **21.**
16. शर्मा, हरीशदत्त. वही. पृष्ठ **19.**
17. मधोक, बलराज,. (1969). पोट्रेट ऑफ ए मार्टियर : बायोग्राफी ऑफ डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी. मुंबई. पृष्ठ **26.**
18. वही. पृष्ठ **19.**
19. गोयल, शिवकुमार. वही. पृष्ठ **35.**
20. द कलकत्ता रिव्यू. (1943). कलकत्ता विश्वविद्यालय. खंड 86. अप्रैल–जून. पृष्ठ **118.**
21. (1935–1938). कन्वोकेशन एड्रेस. कलकत्ता विश्वविद्यालय. खंड 8. पृष्ठ **149.**
22. गोयल, शिवकुमार. वही. पृष्ठ **64.**
23. वही. पृष्ठ **65.**
24. द्विवेदी, शिवानंद. डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस. डॉ० श्यामा प्रसाद, मुखर्जी शोध अधिष्ठानः नई दिल्ली. 23 जून. पृष्ठ **14.**
25. शास्त्री, प्रकाशवीर. वही. पृष्ठ **27.**
26. शर्मा, डॉ० गोविंद. वही. पृष्ठ **75.**
27. शर्मा, हरीश दत्त. वही. पृष्ठ **38.**
28. गोयल, शिवकुमार. वही. पृष्ठ **75.**
29. वही. पृष्ठ **99, 100.**
30. (1953). अमृत बाजार पत्रिका. कलकत्ता. 24 जून. पृष्ठ **1.**